GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Call Number: **GELC-A _ 001 _ 1473**

Classification:

Original File No:

Title

ARTICLE ON THE THEME "PRAYER & WORK"

Volume:

Running **from year: 1980** **till year: 1980**

Content:

- **Article written by following persons for Morning Devotion_ Rev. Albert Minz, Rev. CSR Topno, Candidate Cyril Hemrom, Rev. Dr. M.Bage, Rev. Dr. P.Singh, Rev. Yakub Soreng on the theme "Prayer on Work" from following perspectives respectively Theological / N.T. / O.T. / Adivasi Sarna Religion / God's Commendment / Eat & Sing**

COLLECTION

16.10.1980

MORNING DEVOTION

Albert Minz
CSR TOPNO
Cyril Hemrom
Marsell. Bage
Dr. Paul Singh

प्रार्थना करो और काम करो

16.10.80. (आध्यात्मिक दृष्टिकोण से)

Rev. Albert Minz.

आध्यात्मिक दृष्टिकोण में तो हमें पुराने नियम - नये नियम और मण्डली इतिहास को साथ लेना पड़ेगा।

प्रार्थना से क्या समझते हैं?

प्रार्थना से न सिर्फ विनती - प्रार्थना का अर्थ है, परन्तु इसके साथ गीत भजन, गिरजा आराधना, प्रार्थना समाज, वचनिका, प्रभुभोज भी प्रार्थना ही है। अर्थात जितने भी धर्म सम्बन्धी कार्य क्रम है चाहे वह गिरजा घर के भीतर या बाहर किये जाते जाते है सब प्रार्थना ही है।

काम से क्या समझते है?

जितने भी काम, धार्मिक काम चाहे लौकिक काम सब को काम समझते है। जैसे हाथकिरण शिक्षा देना, उपदेश देना, सेवा करना, दफ्तर का काम, खेतीबारी काम सब प्रकार का परिश्रम काम समझते हैं।

मसीही दृष्टिकोण से धार्मिक काम और लौकिक काम में कोई खास अन्तर या भिन्नता की जगह नहीं है क्योंकि सब काम अच्छे हैं, भलाई के लिए हैं।

(2)

काम का स्रोत कहाँ है?

धर्म शास्त्र के अनुसार ईश्वर सब बातों में मूल है। इसलिए काम का स्रोत ईश्वर है। ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ गुण प्रेम है। इसका सम्बन्ध काम से क्या है। यह प्रेम भावमात्र गुण नहीं है। इसमें गति पायी जाती है। अर्थात ईश्वर हमेशा गतिशील है। इसलिए ईश्वर क्रियाशील है। उसका काम सृष्टि में आरम्भ होता है। ईश्वर के सभी काम में प्रेम निहित है। वह चुप बैठने वाला ईश्वर नहीं है। वह देवी देवताओं की मूर्ति के समान नहीं है। ईश्वर ने सृष्टि किया और सृष्टि में अपना काम को जारी रखा है। ईश्वर बाढ़ भेजता है - जलप्रलय क्योंकि पृथ्वी में पाप बढ़ गया। सृष्टि को पाप से बचाने चाहता है। वह अब्राहम को चुनता और बुलाता है ताकि ईश्वर का योजना उसके द्वारा पूरा हो। वह इस्राएली लोगों को मिस्र की बन्धुवाई से छुड़ाता है। मजदूरों के इतिहास में परमेश्वर काम करता हुआ दिखाई देता है।

(3)

पूरा धर्मशास्त्र ही ईश्वर के कामों का वर्णन करता है। पुराने नियम में ही ईश्वर का काम सीमित नहीं हो जाता है। नये नियम में ईश्वर का काम प्रगट हो जाता है। ईश्वर पैगम्बर नबियों को देते थे भेजता है। उनके द्वारा उद्धारकर्ता के आने का सन्देश देता है। तब उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह को भेजता है। प्रभु यीशु में परमेश्वर के उद्धार का कार्य पूरा होता है। तब वह काम आगे बढ़ कर मण्डली इतिहास में चला जाता है। आज भी परमेश्वर पवित्रात्मा के द्वारा अपना कार्य इसी दुनिया में जारी रखता है।

ईश्वर मनुष्य के ऐसा काम नहीं करता है परन्तु मनुष्य के रूप में वर्णित होकर हाथ पाँव से काम करता है ईश्वर अपने हाथ से मूर्ति बना कर मनुष्य को बनाता है।

ईश्वर की चर्चा में उसके काम को ही देखते हैं। ईश्वर देखता है, सुनता है, बोलता है, बादल के गड़गड़ाहट के साथ बोलता है। वह हस्तक्षेप करता है। कहीं टपके पड़ता है। वह पर्वतों में उतरता है।

वह लोगों के रूप से शासन करता है। जो अत्याचारी है, उनको दण्ड देता है। विधवाओं को न्याय चुकाता है। कहीं-कहीं पर बवंडर के रूप में आता है। कहीं आग में प्रगट होता है।

ईश्वर सिर्फ इसराएलियों के बीच उनको छुड़ाने का काम नहीं किया। परन्तु आमोस नबी के उत्तर से दीखता है कि वह अन्य सब जातियों के बीच में भी काम करता है।

नये नियम योहन 1:18, 4:24 में लिखा है ईश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, वह आत्मा है। उसका हाथ पाँव है कि नहीं। परन्तु ईश्वर के काम को फल को देखकर कहते हैं कि ईश्वर काम करता है।

ईश्वर आत्मा है - स्वभाव है आँधी, तूफान, बवंडर है, शक्ति है, जीवन है। उसका काम, उसने हमें अपने पवित्रता और स्वरूप में सृष्टि किया। ताकि ईश्वर अपने सृष्टि के काम को मनुष्य के द्वारा आगे बढ़ा सके। परमेश्वर के सृष्टि में मनुष्य परमेश्वर का एजेन्ट होकर काम करे। परमेश्वर मनुष्य के द्वारा अपना काम को आगे बढ़ाता है। ईश्वर, मनुष्य के द्वारा काम कर रहा है।

सृष्टि के द्वारा भी ईश्वर काम कर रहा है। ईश्वर ने इस सृष्टि में सृष्टि नियम ठहरा दिया इसलिये ईश्वर का काम चल रहा है।

ईश्वर के काम का तरीका

ईश्वर सर्व शक्तिमान होते हुए भी यीशु मसीह में मनुष्य बना और दास का स्वरूप धारण किया (फिलिप्पी 2:5-7)

यीशु मसीह में ईश्वर मनुष्य बनकर काम किया। अतः यीशु जन्म से मरण तक काम में लगा रहा।

—————— x ——

प्रार्थना करो और काम करो

17.10.80 (आध्यात्मिक दृष्टिकोण से)

Rev. Albert Minz

उत्पत्ति 1:26-28 परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बना कर सृष्टि के काम को आगे बढ़ाने का माध्यम बना दिया।

मनुष्य में स्वतंत्र इच्छा - मनुष्य व्यक्ति है। वह इच्छा करता है और अपनी इच्छा के अनुसार सृष्टि करता है। परमेश्वर ने मनुष्य को सृष्टि के काम को आगे बढ़ाने का काम सौंप दिया। आदम ने जानवरों और सब चीजों का नाम रखा।

चिड़िया एक ही प्रकार का घोंसला बनाता है। मनुष्य अपनी स्वतंत्र इच्छा से तरह तरह मकान बनाते हैं। विज्ञान के सहारे मनुष्य ने बड़े बड़े काम करता यहाँ तक कि चांद तक जा के लौट आया। परमेश्वर ने मनुष्य को Semi Creator बनाया है।

पशु पक्षी और गाछ-बिरछा भी खाते पीते स्वयं का रक्षा करते और वंश वृद्धि करते हैं। मनुष्य भी ये काम करता है परन्तु वह इससे भी आगे

पड़ता है उत्पत्ति 1:28 में परमेश्वर ने मनुष्य को सृष्टि पर अधिकार दिया कि उसको अपने वश रखे।

अदन की वारी- हरा जगत, मनुष्य दुनिया। अदन की वारी में आदम को रख दिया कि उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। यहाँ अपने विवेक का मतलब सृष्टि का कार्य से है।

निर्ग. 20:8, छः दिन तो काम काज करना अर्थात काम पर अधिक समय लगाता है।

निर्ग 4:10-13 मूसा का काम से भागना। बहाना लगाता है। ईश्वर क्रोधित होता है। ईश्वर कामचोर मनुष्यों से क्रोधित होता है।

न्यायी 6:1-7, यिर्म 1:6 ईश्वर काम के लिए मनुष्यों को भेजता है। गिदोन और यिर्मयाह दोनों बहाना करते हैं। योना नबी भी बहाना करता है। ईश्वर के यहाँ मनुष्य का बहाना काम नहीं देता है। योना नबी को जाना ही पड़ता है। काम करता है पर मन से नहीं, काम का फल देखकर कुड़कुड़ाता है।

रूपान्तर के समय पहाड़ के पर्वत आराधना और उपासना की

(3)

की बात करते हैं परन्तु यीशु उन्हें
तुरन्त काम के क्षेत्र में ले चलता
है। एक बीमार बच्चे को चंगा करता
है। प्रार्थना और काम में
घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रार्थना का
अर्थ चुपचाप बैठ ~~रह~~ रहना नहीं
है काम भी करना है।

1 शमू 3:1-17 मंदिर में
शमूएल को काम करने के लिए
बुलाता है। यहाँ शमूएल प्रार्थना
ध्यान से उठ कर काम करने
जाता है।

यशा 6:8 परमेश्वर
कहता है "कौन हमारी ओर से
जायेगा। यशायाह कहता है,
मैं यहाँ हूँ, मुझे भेज, मैं
जाऊँगा। यशायाह काम में
जाने के लिए तैयार हो जाता
है।

प्रार्थना करो और काम करो

(आध्यात्मिक दृष्टिकोण से)

Rev. Albert Minz

प्रभु यीशु के ~~काम~~ प्रार्थना और काम के तरीके:

उसने 40 दिन तक उपवास और प्रार्थना के साथ अपना काम आरम्भ किया। उसने सरल मार्ग नहीं, पर क्रूस का मार्ग अपनाया। परिश्रम का मार्ग लिया।

प्रार्थना और उपवास मार्क 10:45 यीशु कहता है मैं सेवा लेने नहीं, पर सेवा करने आया हूं। काम करने आया हूं।

यीशु यह भी कहता है, मैं वही काम करता हूं जो परमेश्वर पिता करता है। यूहन्ना 17:4. यीशु निरन्तर परमेश्वर के काम को पूरा करता है।

यीशु निरन्तर काम करने की आज्ञा देता है काम का मौका और साधन भी देता है तोड़े का दृष्टान्त में जिसको एक तोड़ा दिया गया, उसने तोड़ा को भूमि में गाड़ दिया

वह काम नहीं करता है, कारबार नहीं करता; इसलिए वह आलसी दास है जिसका है जो परिश्रम नहीं करता उसको उसे यीशु ख्रिस्त डांटता है परन्तु जो काम करते हैं उनको और काम देता है, सराहना करता है। यीशु ख्रिस्त अपने 10 चेलों को काम भेजता है।

यीशु ख्रिस्त स्वर्गदूतों को काम करने भेज सकता था पर हम लोगों को भेजता है कि हम काम करें।

क्या काम करें :—

(1) शारीरिक जीवन के लिए काम करें। यीशु ख्रिस्त ने काम किया। बढ़ई का काम करता था।

पौलुस प्रेरित अपनी जीविका के लिए तम्बू बनाने का काम करता था। ख्रिस्त[illegible] को होना ही काम करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में रविन्द्रनाथ टैगोर का कथन गीतांजली में है

तुम्हारा परमेश्वर मंदिर में नहीं, वह खान के मैदान में है, वहाँ उसको ढूंढो। वहाँ उससे भेंट करो जहाँ पसीना बहा जा रहा है। इसका यह मतलब नहीं कि ईश्वर मनन नहीं करता है।

महात्मा गाँधी भी प्रार्थना मनन करनेवाला व्यक्ति था। फिर भी काम करने में आगे था।

अब हमें अपने कलीसिया की आर्थिक दशा को सामने रखते हुए काम की विशेषता को समझना है। आर्थिक दशा नीचे से ऊपर के हर स्तर तक दयनीय है।

बाहर से आर्थिक सहायता किसी दिन बिलकुल बंद हो जायेगा। देश की परिस्थिति बदल रही है। राजनैतिक उथल पुथल में आर्थिक सहायता किसी समय बंद हो सकता है। पश्चिमी देशों के मसीही विचार भी बदल रहे हैं। वहाँ सांसारिकता बढ़ रही है। अतः इन बातों से हमें सावधान होना है।

परन्तु मेरा विश्वास है कि जिस दिन बाहर से आर्थिक सहायता बंद होगा उस दिन हम अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे। उस दिन से हम 10 के जगह 100 भी मसीह के पास लायेंगे, खुदको बनायेंगे।

मत्ती 6 अध्याय में धन जमा के सम्बन्ध में जो शिक्षा है वह हम आदिवासियों के लिए नहीं है। जो भी यह चीज़ की शिक्षा है वो हमारे लिए ठीक नहीं है। खतरनाक है, मिशनरियों ने सम्भवता इस शिक्षा पर जोर दिया। फलतः बुरा परिणाम हमारे कलीसिया की आर्थिक दशा में आ गई।

यहाँ असल में यहाँ यीशु की शिक्षा है धन पर भरोसा करना ठीक नहीं है न कि धन जमा करना ठीक नहीं है। धन जमा करना ठीक है पर धन पर नहीं ईश्वर पर भरोसा करना है। अतः हमें कोई स्थायी फण्ड का निर्धारण करना चाहिए।

(5)

हमारे पास जमीन है, पर बेकार है। उसकी रक्षा भी मुश्किल से कर रहे हैं। बेकार जमीन को सरकार ले सकती है और गरीबों में बाँट सकती है।

कनीगम होकर हमें जमीन का उपयोग करने के सम्बन्ध में फिर से सोच करना चाहिए। बेकार जमीन को देख कर मेरे मन में समाजवादी विचार उत्पन्न होता है। यदि हम आबाद न करें तो सरकार उसको ~~उस~~ गरीबों ~~को~~ में बाँट ~~स~~ सकती है।

ऐसा नहीं होने देना चाहते हैं तो हम अपने जमीनों को आबाद करें। पक्षिल करें खेती में।

खेती करने में आनन्द है। और लाभ में आर्थिक लाभ है। इसमें मेरा व्यक्तिगत अनुभव है।

प्रार्थना करो और काम करो
(नये नियम के आधार पर)

Date. 16.10.80

Rev. C.S.R. Topno.

प्रार्थना करना और काम करना नये नियम में दोनों साथ-साथ चलता है। इसके लिए हमारा प्रभु यीशु मसीह ही सुन्दर आदर्श है।

प्रार्थना

नये नियम में प्रार्थना के लिए भिन्न २ शब्द व्यवहार किया गया है।

(क) निवेदन करना :— यह शब्द अर्थात निवेदन करना ईश्वर से और मनुष्य से, दोनो में व्यवहार किया गया है।

मती 9:38, लूक 10:2, लूक 21:36 22:32, यहाँ निवेदन ईश्वर से सम्बन्धित है।

2 को 5:20, प्रेरित क्रिया 8:34 2 को 8:4, यहाँ निवेदन मनुष्य से सम्बन्धित है।

(ख) माँगना या याचना करना :—

यह शब्द भी ईश्वर से और मनुष्य से सम्बन्धित है।

(i) ईश्वर से - योहन 4:31, 16:26, 14:16

(ii) मनुष्य से — प्रेरित 18:48, 23:18।

(ग) प्रार्थना करना या विनती करना :—

2 को 13:7, याकूब 5:16,
यहाँ प्रार्थना करना सिर्फ ईश्वर से सम्बन्धित है। यहाँ सीधा प्रार्थना के अर्थ में है।

प्रार्थना करना क्यों आवश्यक है

(क) ताकि कुछ मिले - मती 7:38
(ख) प्रार्थना नहीं करने से किसी प्रकार भी परीक्षा में पड़ सकते है। लूक 21:36,
(ग) ताकि सावधान रह सके
। थिस : 3:10, यूहन्ना 17:9, 17:15,
लूक 22:32, प्रेरित 8:24,

किस प्रकार प्रार्थना करना चाहिए?

मती 6:5-15 में प्रार्थना के सम्बन्ध में प्रभु के विशेष हिदायतें दी हैं।

(1) गुप्त में प्रार्थना करे :— यहाँ व्यक्तिगत प्रार्थना की बात है। परन्तु इससे सामूहिक प्रार्थना पर दोष नहीं लगाया है। पर दिखावे की प्रार्थना को दोष देता है।

(2) सामूहिक प्रार्थना :— इसकी भी आज्ञा है परन्तु कुछ लोग इसको महत्व नहीं समझते है। ऐसे मसीही लोग भी है और इसका विरोध भी करते है।

प्रार्थना का फल

(क) फल दिखाई देता है — प्रभु यीशु की प्रार्थना से लाजर मृतक में से जी उठता है।

(ख) चेले प्रभु यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं उसका फल - पतरस की प्रार्थना से लंगड़ा चंगा होता है।

मनुष्य से प्रार्थना का फल

(1) नाकि कुछ काम हो प्रेरित 16:9, प्रेरित 16:15।

(2) लुदिया की प्रार्थना - पौलुस का फिलिप्पी में ठहरना।
बड़ा काम — जेल का दरोगा यीशु मसीह में विश्वास करता और उसके सारे परिवार - का उद्धार
परन्तु यहां दोनों स्थानों में प्रार्थना का फल देने वाला ईश्वर ही दिखाई देता है। ईश्वर ही प्रार्थना का सुनने और फल देने वाला है।

— X —

~~काम करो~~

18.10.80. प्रार्थना करो और काम करो
(नये नियम के आधार पर)
Rev. C.S.R. Topno.

पुराने नियम में बैरियों के नाश के लिए प्रार्थना है पर नये नियम में बैरियों के उद्धार के लिए प्रार्थना पायी जाती है। यीशु स्वयं क्रूश पर अपने बैरियों के लिए प्रार्थना करता है— "पिता उन्हें क्षमा कर"।

परहितप्रार्थना और अपने लिए भी प्रार्थना के विषय पाते हैं। मत्ती 6:1-15 दूसरों के लिए प्रार्थना के सम्बन्ध में नये नियम में अनेक स्थानों में मिलती है।

नये नियम में काम के सम्बन्ध में

नये नियम में "काम करना" सेवा करना आदि शब्द आया है।
काम का सम्बन्ध कई बातों से है -
(क) ऐसे काम जिनका सम्बन्ध दुष्टात्मा से है - रोमी 7:5, इफि 2:2
दुष्टात्मा के वश में होकर काम करना।
शरीर की इच्छाओं के वश में होकर काम करना।

(ख) 1 कुरि० 12:11, इफिसि 3:20,
यहाँ ऐसे काम हैं जिनका सम्बन्ध परमेश्वर के आत्मा से है।

दुष्टात्मा से सम्बन्धित काम का फल बहुत ही दयनीय है - अर्थात मृत्यु है। परन्तु परमेश्वर के आत्मा से सम्बन्धित कामों का फल धन्य दशा है, सुन्दर भविष्य है। ऐसे काम परमेश्वर के आत्मा की सहायता से ही सम्भव है।

यूहन्ना 6:28-29 में परमेश्वर का कार्य हमें करना है। वह काम तो उसके भेजे हुए पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करना है।

गलातियों 5:18-22 में शरीर के कामों को त्याग कर आत्मा के कामों को करने के विषय है। परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है इसी लिए परमेश्वर हमें अपना सहकर्मी बनाया है।

मनुष्य अपने लिए और दूसरों के लिए परमेश्वर का सहकर्मी होकर काम करे।

पहले मनुष्य की दशा धन्य थी। उसी दशा को फिर से प्राप्त करने को हमें परमेश्वर का सहकर्मी होकर काम करना है।

लौकिक काम

इस सम्बन्ध में नये नियम की शिक्षा है कि जो काम न करे, सो खाने भी न पावे।

आत्मिक काम

1 कोरिन्थ 16:10, फिलिप्पी 2:12

ऐसा नहीं कि एक बार हमने आत्मिक काम किया, तो हम बचाये गये, अब हम चुप रहें ऐसा नहीं है। बल्कि हमें उद्धार में बने रहने के लिए हमें लगातार काम करना है।

परमेश्वर खुद इस काम को आरम्भ किया, और जारी रखा है। उसमें हमको उसका सहकर्मी होना है।

मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा है - हम चाहें तो दुष्टात्मा के काम करेंगे जिसका फल दुःख ही दुःख है। हम चाहें तो परमेश्वर के आत्मा का काम करेंगे जिसका फल अनन्त सुख है।

हमें अपने उद्धार के लिए परमेश्वर के साथ खुद को भी काम करना है। हमारा उद्धार बन्दर के बच्चे के समान है, न कि बिल्ली के बच्चे के समान। बन्दर का बच्चा के समान हमें भी कुछ परिश्रम करना है।

बन्दर का बच्चा माँ के पेट लटकता है। बिल्ली का बच्चा माँ अपने मुँह में दबा ले जाती है।

हमारा उद्धार बन्दर के बच्चे के समान है। हमें अपने उद्धार के लिए खुद को काम करना है, परिश्रम करना है।

—— x ——

(2)

प्रार्थना करो और काम करो
(नये नियम के आधार पर)

19.10.80

Rev. C.S.R. Topno

नये नियम में प्रार्थना और काम दोनों एक साथ चलता है। प्रभु यीशु तो सबसे अधिक प्रार्थना करने वाले व्यक्ति था। (लूका 5:16) इतना अधिक प्रार्थना के बाद भी वह काम से नहीं भागता है। लोगों को खिलाता और तृप्त करता है (मार्क 6:30 – 44)

वह प्रार्थना से सब कुछ कर सकता था, अपने शत्रुओं पर आग वर्षा कर सकता था क्रूस से उतर सकता था। पर प्रभु ने ऐसा नहीं किया। उसके काम का तरीका ऐसा नहीं था। वह परिश्रम और कठिनाई का मार्ग को लेता है।

~~फिलिप्पी~~ 2 अध्याय में प्रभु यीशु का दास रूप धारण के विषय में है। दीन, आधीन होकर पिता की इच्छा पूरा करता है।

चेले भी प्रार्थना के द्वारा सामर्थ के काम करते थे। प्रेरित 13:11, 14:8, मुर्दों को भी जिलाये, लंगड़ा को चंगा किये।

पौलुस का काम - सुसमाचार प्रचार करना था।

यीशु का नमूना

(1) बहुत बार सिर्फ प्रार्थना करता था।
सिर्फ प्रार्थना सीखने चेले होते थे।

(ii) बहुत बार प्रार्थना के साथ परिश्रम भी करता था। हाथ पकड़ कर याईर की बेटी को चंगा करता है।

जन्म के अन्धे को चंगा करने में ज़मीन की मिट्टी को थूकता और थूक, मिट्टी से आँख में लेप करता और चंगा करता है। इन उदाहरणों से दीखता है यीशु प्रार्थना के साथ काम में लगा रहता है। पैदल ही सुसमाचार प्रचार करता और रोगियों को चंगा करता और दुखियों की सहायता करता था।

नये नियम का परमेश्वर हर समय काम करता है। काम और प्रार्थना दोनों साथ चलता है। इतना अन्तर जरूर है कि कभी काम पर अधिक जोर होता है तो कभी प्रार्थना पर अधिक जोर होता है।

अतः हम प्रार्थना के साथ काम में भी लगे रहें, ताकि हम परमेश्वर का सहकर्मी हो सकें।

— x —

" प्रार्थना करो और काम करो "
(पुराने नियम के सन्दर्भ में)

Date 16.10.80

By Cand. Cyril Hembrom

(1)

1. हम प्रार्थना क्यों करते हैं?

(क) हम प्रार्थना इसलिए करते हैं, क्योंकि प्रार्थना के बिना हम जी नहीं सकते। प्रार्थना मनुष्य के जीवन से लगा हुआ है।

(ख) प्रार्थना इसलिए करते हैं कि हमें विश्वास है कि कोई सुनने वाला है। इस विश्वास के बिना हम प्रार्थना नहीं कर सकते।

(ग) इसलिए हम प्रार्थना करते हैं क्योंकि हम कमजोर हैं, शक्तिशाली सुनने वाला से सहायता चाहते हैं।

(घ) अपने जीवन को सक्रिय बनाने के लिए भी हम प्रार्थना करते हैं।

2. हम काम क्यों करते हैं?

(क) हम काम करते हैं क्योंकि जन्म से यह हमारा स्वभाव है।

(ख) हम काम इसलिए करते हैं क्योंकि हमें कुछ वस्तुओं की आवश्यकता है।

(ग) काम जीवित रहने का प्रतीक है। काम न करें तो जीवित भी नहीं है। काम करना हमारा अधिकार और कर्तव्य भी है।

(घ) हम इसलिए काम करते हैं, क्योंकि उसमें हमको आनन्द है। काम न करें तो आनन्द भी नहीं है।

पुराने नियम में (धर्मशास्त्र में) प्रार्थना का अर्थ

इब्रानी में प्रार्थना के लिए "फलला" शब्द आया है जिसका अर्थ न्याय करना और दखल करना भी है।

न्याय करने के अर्थ में 1 शमू 2:25, और यहेजकेल 16:52 में मिलता है।

प्रार्थना के अर्थ में - यशा 45:20, 1 राजा 8:42

प्रार्थना संज्ञा के रूप में - "तफिल्लाह"।

अब देखें पुराने नियम में लोग प्रार्थना से क्या अर्थ लेते थे :→

(क) प्रार्थना एक प्रायश्चित है — उत्पत्ति 20:17. अबिमेलक सारा को ले जाता है। इससे उन पर विपत्ति आती है। इस पर परमेश्वर का वचन आता है "सारा को लौटा दे, वह तेरे लिए प्रार्थना करेगा"।

(ख) प्रार्थना एक संगति है : — अगर प्रार्थना नहीं करते हैं तो ईश्वर का संगति नहीं है। यही सबसे बड़ा पाप है जो मृत्यु कहलाता है।

(ग) प्रार्थना एक समर्पण है : —

प्रार्थना करने वाला अपने को ईश्वर के सामने दीन कर देता है और अपने को ईश्वर के हाथ में सौंप देता है।

पुराने नियम में प्रार्थना के क्या रूप थे :-

(क) बलिदान :- पुराने नियम में बलिदान प्रार्थना का ही एक रूप था। बलिदान चढ़ाने वाला अपना निवेदन ईश्वर के हाथ में समर्पित कर देता है।

(ख) गीत गाना :- पुराने नियम में भजन संहिता गीतों का संग्रह है। ये भजन प्रार्थना के रूप में हैं। निर्गमन 15 अध्याय और न्यायियों 5 अध्याय का गीत भी प्रार्थना के रूप में है।

(ग) उपवास करना :- उपवास करने वाला पूर्ण रूप से प्रार्थना के लिए तैयार होता है। लैव्य. 23:27, एज्रा 8:21, योहन्ना 3:5।

पुराने नियम में प्रार्थना के मुद्रा :-

(क) खड़े होकर प्रार्थना करना - एस्तेर 5:1 एस्तेर राजभवन में खड़ी हो जाती है जो राजा से प्रार्थना करती है। 1 शमू 2:5 हन्ना सम्भवतः खड़े होकर प्रार्थना कर रही थी।

(ख) बैठ कर प्रार्थना करना : — १ राजा १८:३

बाल के पुजारी और एलियाह बैठ कर प्रार्थना कर रहे थे।

(ग) भूमि पर गिर कर प्रार्थना करना : —

यहोशू 5:6 में इजराएली सैनिक "ऐ" हार खाने के बाद भूमि पर गिर कर प्रार्थना किये।

(घ) चिल्ला कर प्रार्थना करना : —

निर्गमन 14:10 में इजराएली सब मिलकर जोर से चिल्ला कर प्रार्थना किये।

(ङ) रो-रो कर प्रार्थना करना : —

१ शमू २ एज्रा 8:3 आदि में रो रो कर प्रार्थना करने के विषय में है।

पुराने नियम में प्रार्थना के प्रकार : —

पुराने में दो प्रकार से लोग प्रार्थना करते थे : — (क) व्यक्तिगत प्रार्थना : — उत्पत्ति 9:19 ज्ञइति 33:19, दानियल 9:3.

(ख) सामूहिक प्रार्थना : —

यहोशू ~~7:6-9~~, 7:6-9, २ इतिहास 6:12-13

यहाँ सामूहिक प्रार्थना के लेख देखने को मिलता है।

प्रार्थना का समय :

पुराने नियम में कब कब प्रार्थना किया जाता था :—

(क) विशेष विशेष पर्वों में प्रार्थना करते थे / जैसे फसह, पुरीम, आदि पर्वों में /

(ख) बलिदान के समय :— बलिदान के समय में विशेष रूप से प्रार्थना किया जाता था / लैव्य व्यवस्था में अनेक बलिदानों का चर्चा है / इन बलिदानों के समय में प्रार्थना करते थे / बलि-दान के साथ प्रार्थना जरूरी था /

(ग) काम के आरम्भ में :—

जब कोई काम आरम्भ करते थे तो वे प्रार्थना करते थे / यदि घर को यहोवा न बनावे तो बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ है / घर बनाने के आरम्भ में प्रार्थना करते थे / फिर

यात्रा के आरम्भ में भी प्रार्थना करते थे। एज्रा 8:23, 9:6. बाबुल से एज्रा जब अपनी यात्रा आरम्भ करता है तो वह उपवास और प्रार्थना करता है।

17.10.80

प्रार्थना करो और काम करो
(पुराने नियम के सन्दर्भ में)
Card. Cyril Hembrom

प्रार्थना का समय :—

(i) पर्वो में प्रार्थना :— अखमीरी रोटी का पर्व, कटनी पर्व, झोपड़ियों का पर्व। इन पर्वों के समय में प्रार्थना की जाती थी।

(ii) बलिदान के समय प्रार्थना :—
बलिदान के समय प्रार्थना करते थे। बलिदान स्वयं भी एक प्रार्थना है।

(iii) किसी काम के आरम्भ में प्रार्थना :—
एज्रा 8:23, 9:18, बाबुल से येरुसलेम यात्रा के आरम्भ में प्रार्थना।
1 राजा 8:22, येरुसलेम मन्दिर बनाने के आरम्भ में प्रार्थना।

(iv) किसी संकट से पार करने पर प्रार्थना :— निर्ग 15 अध्याय लाल समुद्र से पार करने पर प्रार्थना
न्याय 5 अध्याय शत्रुओं से बचने पर प्रार्थना।

(2)

(v) विपत्ति के समय प्रार्थना : —
विपत्ति के समय में भी पुराने नियम के लोग प्रार्थना करते थे। इस तरह का प्रार्थना तो स्वाभाविक है।

पुराने नियम में किनके लिए प्रार्थना की जाती थी : —

(I) इसराएली मण्डली या राष्ट्र के लिए प्रार्थना की जाती थी : — जैसे भजन संहिता 122, यशा: 62: 6-7,

(ii) स्वामियों के लिए दास लोग प्रार्थना करते थे : — उत्पत्ति 24: 12-14, लाजर अपने स्वामी के लिए प्रार्थना करता है।

(iii) अपने सन्तानों के लिए प्रार्थना करते थे : — उत्पत्ति 17: 18
अब्राहम अपने सन्तान इस्माएल के लिए प्रार्थना करता है।

(iv) मित्रों के लिए प्रार्थना करते थे : — अय्यूब 8: 42 अय्यूब अपने मित्रों के लिए प्रार्थना करे।

(V) शत्रुओं के लिए प्रार्थना की जाती थी :— पुराने नियम में शत्रुओं के नाश के लिए प्रार्थना की जाती थी क्योंकि अधर्मियों को अपना प्रतिफल मिलना ही चाहिए। परमेश्वर न्यायी है अधर्मियों को दण्ड देगा ही।
यर्मि 7:27, मत्ती 5:44,

(Vi) ईर्ष्या करने वालों के लिए प्रार्थना करते थे :— मूसा की प्रार्थना। इष्याल मरियम और हारून के लिए (गिन्ती 12:13)।

(Vii) परमेश्वर के विरोधियों के लिए प्रार्थना :— गिन्ती 11:1-2, 14:13-19,

N.B. प्रार्थना —— प्रार्थना मनुष्य के जीवन को क्रियाशील करने के लिए एक क्रिया है। प्रार्थना स्वयं भी एक काम है।

Date
18·10·80

प्रार्थना करो और काम करो
(पुराने नियम के सन्दर्भ में)

By Cand. Cyril Hembrom.

काम के सम्बन्ध में:
इब्रानी: ORA ACT ABODA.

काम का आरम्भ:

इब्रानी ABAD अर्थात काम का अर्थ — काम करना, सेवा करना, आराधना करना भी है। (इति 28:9, भजन संहिता 72:1, व्यवस्था विव: 12:14,, उत्पत्ति 1:1-2)

परमेश्वर ही काम का आरम्भ करने वाला है। इब्रानी BARA का अर्थ — परमेश्वर ने कुछ नहीं से कुछ सृष्टि किया।
ELE RUA — तेज हवा
परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था। जल समुद्र और अंधियारा मृत्यु का प्रतीक है। परन्तु परमेश्वर यहाँ मृत्यु की शक्ति पर प्रबल दिखाई देता है। उसका आत्मा उसके ऊपर मण्डलाता है और बेडौल सृष्टि को सुन्दर सृष्टि में बना डालता है। यहाँ परमेश्वर काम करता हुआ दिखाई देता है। इसलिए काम का आरम्भ परमेश्वर ही ने किया।
उत्पत्ति 2:7-8, 15-16
पद 7-8 में परमेश्वर स्वयं काम करता है।
पद 15-16 में मनुष्य को करने की आज्ञा देता है।

काम का महत्व :

इसराएली लोग काम का महत्व को जानते थे। उनका जीवन क्रियाशील जीवन था। हर प्रकार का काम करते थे. भेड़ बकरी पालने चराने का काम, बाद में खेती बारी काम भी। उनके समय में काम में कठिन परिश्रम करना पड़ता था। काम के समय खतरा और जोखिम भी था। भेड़ चराने में जंगली जानवरों और लुटेरों का भय था। वे सिर्फ लौकिक कामों में नहीं रहते थे। धार्मिक काम का विशेष महत्व था। सेवा आराधना करना, बलिदान चढ़ाना आदि। राजनैतिक क्षेत्र में भी उनको करना पड़ता था। वैरियों से अपने को बचाने का काम भी विशेष महत्व रखता था।

गीत गाना भी एक विशेष काम था। कला संस्कृति से सम्बन्धित काम भी करते थे। यथा 5:1, ।

काम के प्रकार :

(1) धार्मिक काम — सेवा आराधना करना, बलिदान चढ़ाना।

(ii) राजनैतिक काम — शत्रुओं से लड़ाई देश की रक्षा करना।

(iii) आर्थिक काम — भेड़ पालना, व्यापार करना, खेती बाड़ी करना।

(iv) सामाजिक काम — पुरनीये लोगों की सभा/ नगर से बाहर पंचायत बैठते थे। नगर में मकान एक दूसरे से सटे रहने के कारण जगह नहीं था। सामाजिक सुधार की बातें होती थी।

काम का समय

काम का समय निर्धारित था। छः दिन शरीर के लिए लौकिक काम काज करना था और सातवें दिन परमेश्वर की सेवा आराधना के लिए मन्दिर में जाना था।

काम के बाद विश्राम —

छः दिन काम के बाद सातवे दिन विश्राम। जो काम न करे उसे विश्राम का अधिकार नहीं है विश्राम का अर्थ स्वर्ग भी होगा।

जो काम न करें वह किसी का अधिकारी भी नहीं होगा।

काम के साथ ही साथ विश्राम की आज्ञा है :—

निर्ग २०:९ व्यवस्थाविव 5:13

मनुष्य को विश्राम की आज्ञा नई स्फूर्ति के लिए।

मनुष्य के साथ ही साथ जानवर और भूमि को भी विश्राम देने की आज्ञा है।

काम का स्थान

इस्राएली लोग कम सभ्य और सामाजिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से कमज़ोर लोग थे। फिर भी परमेश्वर उनको विशेष काम के लिए चुनता है। उनके द्वारा सारे जगत को उद्धार करने चाहता है। इसलिए वह उनको काम करने सिखाया। परन्तु वे परमेश्वर की योजना को समझ नहीं सके। वे स्वार्थी हो गये। वे अपना ही उद्धार चाहते थे दूसरों का विनाश। वे अन्य

देशों में जाना नहीं चाहते थे। कानान ही पवित्र देश था। दूसरे देशों में कैसे शियोन के गीत गा सकते थे। वे बाहर जाना नहीं चाहते थे। इसी संकुचित विचारधारा के कारण ही परमेश्वर ने उनको बार बार दण्ड दिया, और 135 ई० के पूर्व ही वे सारे संसार में तितर बितर कर दिया।

इसराएली लोग प्रार्थना और काम को अलग नहीं करते थे। प्रार्थना भी स्वयं एक काम है। हाथ जोड़ना, उपवास करना, बलिदान चढ़ाना भी प्रार्थना ही था।

वे इसको ठीक रूप से समझते थे कि वे स्वयं कुछ नहीं कर सकते हैं। परमेश्वर ही उनका सहायक है। इसलिये वे हर काम के आरम्भ में प्रार्थना करते थे।

इसराएली लोगों के लिए पर्वतों की विशेषता थी। उनका रक्षक था। पर्वतों में निवास करने वाला

सिनाई पहाड़ का परमेश्वर उनका रक्षक और सहायक है / सहायता के लिए प्रार्थना और शत्रुओं से बचाव के लिए स्वयं शत्रुओं का सामना करना / प्रार्थना के साथ काम की आज्ञा दी जाती है /

प्रार्थना और काम

(i) परमेश्वर प्रार्थना का जवाब काम करने वालों को देता है /

(ii) परमेश्वर स्वयं काम करता है, वह न सोता है, न ऊंघता है; परन्तु वह सदा जागरूक है /

(iii) परमेश्वर काम करने की आज्ञा के साथ प्रार्थना करने की आज्ञा देता है। छः दिन शरीर के लिए सातवें विश्राम के लिए अर्थात प्रार्थना के लिए आज्ञा देता है /

(iv) बाद में इस्राएली लोगों का पर्व त्योहार रीति विधि मात्र रह गया था परमेश्वर उनको डांटता है /

(v) काम और प्रार्थना दोनों साथ-साथ करना है, यही परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा है /

प्रार्थना करो और काम करो
(आदिवासी सरना धर्म के सन्दर्भ में)
By Rev. Dr. M. Bage

गैर मसीहियों के बीच काम के पहले प्रार्थना करने की बात है कि नहीं। प्रार्थना तो बातचीत करना है। क्या इस मसीही अर्थ में गैर मसीहियों की भी समझ है। परन्तु गैर मसीही लोग तो मूर्ति या पत्थर के सामने दण्डवत करते है। यह प्रार्थना है कि नहीं। ~~झाड़ना~~

झाड़ना :- किसी को साँप काट दे तो झाड़ने वाले बुलाते है और वह झाड़ता है। वह प्रार्थना है कि नहीं।

सांसारिक विश्वास जो किसी अदृश्य शक्ति पर है उनसे प्रार्थना में बातचीत करते है। इसलिए उनका प्रार्थना प्रार्थना हो सकता है।

हीरा पाड़ी (मुन्डा) या एरे ओड़ी: (उराँव) कन्य देखने जाने के समय में यह विश्वास है कि कोई अदृश्य शक्ति हस्तक्षेप करने वाला है।

सांसारिक रीति के अनुसार साधारण, या विशेष काम के आरम्भ में पूजा-पाठ करते हैं या विशेष पर्व मनाते है जैसे हेरो पर्व - (बुना पर्व) कोलोम सिंग या कोलोम बोंगा (खलिहान पर्व), बहा पर्व, (सहरुल पर्व),

हमारे पर्व विशेष घटनाओं से निर्मित हैं। परन्तु हमारे गैर मसीही आदिवासी लोगों का पर्व-त्योहार कार्य विशेष से सम्बन्धित है। इन पर्वों को भी इन मसीही लोग भी अब मानने लगे हैं - धान बुनी, करमी पर्व आदि।

खाओ और गाओ (मिशन काम के सन्दर्भ में)
Rev. Yakub Soreng (आराधना के सन्दर्भ में)
प्रेरित 10:9.16, यशा 55:1-5

परमेश्वर की आज्ञा – मेरे सामने दूसरे देवताओं मत मान। उसका मूर्ति मेरे चेहरे को इन वस्तुओं से मत ढाँप।

इसमें खा-पीकर सुसमाचार प्रचार की बात है। अन्यजातियों के सामने मेरे चेहरे को मत ढाँप।

यहाँ Motive की बात है।

प्रचार कार्य में
(i) Motive होना
(ii) ~~संकल्प करना~~ Man power
(iii) Material

खाने पीने और गाने का प्रभाव –
(i) खाने पीने से शारीरिक बल मिलता है।
(ii) गाने से मन की तृप्ति।

यशा 55:1-5
में खाने पीने की बात।
शारीरिक भोजन के सिवाय आत्मिक भोजन की बात है।
परमेश्वर के निकट आना

(२)

तो मतलब मिलेगा।

सम्प्रति: इनके खाने-पीने से अन्य जातियों के सामने परमेश्वर को ठोकर पर खड़ा पड़ सकता है।

हँड़िया-दारु पीना मना है लेकिन कलीसिया में छूट। इन लूथरन ख्रीस्तान और ... हाँड़िया दारु पीने पर जोर रहे हैं। गाते भी हैं, हाँड़िया दारु पीना छोड़ा - मतवाल होकर घूम है। जबरदस्ती के समय ऐसा देखने को मिलता है।

प्रेरित 10:9-16 जहाँ खाने पीने की चर्चा है। पतरस का दर्शन

आत्मिक रूप से खाने पीने अन्यजाति ग्रहण करने की बात है — अन्य जातियों को ग्रहण करने की बात है। पतरस अन्य जातियों को प्रचार करने नहीं चाहता था। परन्तु परमेश्वर उसके विचार को बदल देता है।

अभी तक हमारा कुड़ुख उराँव इसाई लोगों तक में ही है, इसके आगे दूसरे जातियों तक नहीं पहुँच पाये हैं। यह तो मिशनारियों का भी दोष था कि इन्होंने क्यों केवल आदिवासियों को प्रचार किया। राजाओं को नहीं।

खाओ और गाओ
(मिशन काम के सन्दर्भ में)
Rev. Yakub Soreng
प्रेरित क्रिया 10:9-16 यशा 55:
1-5, योहन्ना 4:24-26
A.B.C — Action, break, coyze,
क.ख.ग — काम करो, कमाओ, खाओ,
गाओ।

प्रार्थना -
अवोदा — दण्डवत करना यह
भी काम।
लेकरोन — काम के अर्थ में।
अवोदा मालकरोन का मौलिक
अर्थ काम करना है। ऐसा काम करते
हैं जिससे हमें पुरस्कार दी जाती
है।

break and Coyze.
खाओ और गाओ -
हम अयोग्य हैं फिर भी ईश्वर
चुनता है। इसलिए -
मिशन काम में हमें जो गुण

होना चाहिए। वह निम्न लिखित है/

(१) शैक्षणिक योग्यता - शिक्षित होना

(२) काम में दक्षता - Active

(३) उपासना → सिर्फ मिशन पर नहीं, सब समय/

डेविड फिलिप ~~डेविड~~ ने मिशनरियों से कहा है तुम्हारा परमेश्वर बहुत छोटा है/

(४) शारीरिक योग्यता - शरीर स्वस्थ कार्य करें/

(५) खाने पीने की योग्यता - पाचन शक्ति पर ध्यान/

(६) खाने पीने और गाने की क्रिया का प्रभाव —

रोमी 12:1 - उसमें न सिर्फ आत्मा परन्तु शरीर को भी बलिदान होने की बात है/

शरीर और आत्मा दोनों प्रभावित होता है/ मिशन काम में शरीर और आत्मा लगाना है/ पूर्ण रूप समर्पण हो/

खाने पीने गाने का उद्देश्य मिशन काम हो/

परन्तु यह सत्य है परमेश्वर की योजना में जाति विशेष की बात तो नहीं है बल्कि वह तो निर्बल लोगों को अपना सन्देश देता है। प्रभु के जन्म का सन्देश गड़ेरिया को सुनाया। आदिवासी लोग वैसा ही है।

Date. 17.10.80. Second Time गीत गाओ

सुसमाचार प्रचार में हमारा खाना-पीना कितना महत्व रखता है उसको हमने देख लिया है। अब देखेंगे कि गीत गाने का कितना महत्व है।

गीत में क्या होता है
उसमें (1) वचन या दोहा, और
(2) उसमें राग बैठाते हैं।

गीत का सम्बन्ध आत्मिक अन्तरिक दशा से है। उसका सम्बन्ध चर्च से भी है। परमेश्वर से मेल मिल कर जो विचार उत्पन्न होता है गीत के रूप में प्रगट होता है।

चर्च भारत में भी अनेक गीत हैं — भजन संहिता, ग्रीष्म गीत, विलाप गीत, धार्मिक

ये गीत दर्दों के गीत।

गीतों के द्वारा मनुष्य नीचे से ऊपर परमेश्वर की ओर पढ़ने की कोशिश कर रहा है।

गीतों के रूप में प्रार्थना भी करते हैं। परमेश्वर का उत्तर भी है। प्राकृतिक घटनाओं द्वारा, स्वप्न में।

गीतों के द्वारा परमेश्वर को धन्यवाद भी देते हैं।

गीतों के द्वारा परमेश्वर के सामने पश्चाताप करते हैं।

विश्वास को प्रगट करने के सम्बन्ध भी गीत गाते हैं।

शोक के समय गीत, दुःख और मृत्यु के समय का गीत।

गीत गाने की क्रिया में बहुत बातों को हम छोड़ते हुए हैं और बहुत बातों को नहीं भी हुए हैं। इसी लिए पुरखों के गीत में सामाजी राग नहीं होता था। यह विशारदियों का देन था। राग का

सम्बन्धों को परिस्थितियाँ और
समय के अनुसार होता है। अब
समय और परिस्थितियाँ बदल
चुकी हैं। यह सब अंग्रेज़ों के
साथ मिशनरियों का ही देन है।

रोमन कैथोलिक लोगों तो
इसमें आगे बढ़ चुके हैं
वे तो संताल पर्व मनाने भी
आगे बढ़ चुके हैं। वे कर्मा
गाड़ चुके होंगे। परन्तु हम
इस ओर जाने से डरते हैं।
क्योंकि इससे विश्वास से भटकने
का डर है। परन्तु इससे
हम अपने विश्वास को
प्रगाढ़ भी कर सकते हैं।

संथाली गीत में Extra Power
की जरूरी होता है अर्थात हड़िया
दारु पीकर गीत गाना।

अब हमें संथाली राग
के गीतों के द्वारा भी प्रचार का
प्रयास है। यह मुसलमानों के कव्वा-
ली में दीखता है। राग हमें
बना भी सकता है, पश्चाताप

कारण रोकते हैं।

परन्तु हमारे गीत बहुधा मुसलमानी प्रभाव में कायम भी होते हैं।

गीत के लहर, नाच ढंग का प्रभाव होता है जो मुसलमानी कार्य में ठीक [illegible] होते हैं।

वाद्य यंत्रों का व्यवहार -
पहले सारंगि के राग आदि बाद्य का व्यवहार मना था परन्तु अब समझा गया है कि इसको अपनाते हुए भी मुसलमानी प्रभाव से बच सकते हैं।

Date 17.10.80.

Morning Devotion

By Rev. Dr. Singh

वचन उत्पत्ति 2:15-17, निर्ग० 20:1-2.

ईश्वर की आज्ञा — उसके सृष्टिकर्ता और सर्वशक्तिमान होने का प्रमाण है। उत्पत्ति 2:15 ईश्वर की इच्छा। 2:16 सबसे पहले ईश्वर का मनुष्यों को आज्ञा। भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल न खाना। आज्ञा तोड़ने का मतलब ईश्वर की संगति से अलग होकर मर जाने का प्रतीक है।

पाप में गिरने से पहले ही काम करने की आज्ञा है। काम करना पाप का फल नहीं है। पाप करने से मनुष्य न केवल सृष्टिकर्ता से अलग होता है, पर सृष्टि से भी अलग हो जाता है। अपने भाई हाबिल को मार डालता है।

उत्पत्ति 12 - अब्राहम का चुनाव। पापी मनुष्य में घिर जाता है। वो भी प्रेम रखता है। अब्राहम उससे परमेश्वर प्रेम रखता है। अब्राहम को बुलाता है। आज्ञा - इस देश में जाओ जिसे दिखाऊँगा। फिर इसके साथ आशीष की प्रतिज्ञा है। तेरे द्वारा भूमण्डल के सब लोग आशीष पायेंगे। दस आज्ञाएँ - जाओ प्रेम करो और अहिंसा के साथ प्रतिदिन व्यवहार करो और पवित्रता से विश्वास करो और पवित्रता से उद्धार होगा। परमेश्वर की आज्ञा के आशीष की प्रतिज्ञा भी है।

आशीष - हम लोगों को अन्धकार से, मृत्यु के जोखिम से निकाल

लिया है, इन दो कानूनों में ही सब सन्निहित है।
हम परमेश्वर द्वारा प्रदत्त हैं।

अतः हमारे लिए भी परमेश्वर की
आज्ञा है निर्ग 20:1-2, इस आज्ञा
मानने से हमारा उद्धार नहीं मिलता है
हम इस आज्ञा मानने को लाचार हो जाते हैं।
हम तो इस इसलिए पालन करते हैं कि
प्रभु यीशु ने हमारा उद्धार को कमाया है। (इसी
उद्धार में बने रहने के लिए इस आज्ञा
मानना आवश्यक है।

इन आज्ञाओं का सारांश — परमेश्वर
को प्यार करना और पड़ोसी को
प्यार करना। पड़ोसी प्रेम — आजकल
नबी की दुनिया में इन सारे लोगों
को डांटता है कि अपने पड़ोसियों
कहीं है।

यूहन्ना की पत्री, जो अपने भाई
से बैर रखता है, वह बुरा है।

परमेश्वर से प्रेम और पड़ोसी
से प्रेम न रखना किसी एक को इनकार
करना ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन है।

परमेश्वर की आज्ञा —
मैं तुम्हें भेजता हूँ।

Date: 18.10.80

Morning Devotion

भजन सुसमा० - 215
वचन - गलति 6:2
Rev. Dr. Singh.

परमेश्वर की आज्ञा -

युहन्ना 13:33 आज हमलोग प्रभु यीशु मसीह हमें नई और अन्तिम आज्ञा देता है युहन्ना 13:33, एक दूसरे से प्रेम रखो।

गलति 6:2 इसी आज्ञा का दूसरा रूप है - एक दूसरे का भार उठाओ। यह प्रेम का आज्ञा है।

मत्ती 28:19 तुम जाकर सारे जगत के लोगों का सुसमाचार प्रचार करो।

मनुष्य पाप का बोझ से दबा हुआ है। गरीब होने, अनपढ़ होने, अस्वस्थ होने का भार मनुष्य में है। परन्तु गलति पत्री में देखते हैं - पाप का बोझ से मनुष्य दबा हुआ है। उससे बचाने का काम भार उठाने का काम हमें करना है।

पड़ोसी से जो कुछ करते हैं वह प्रभु के लिए करते हैं। तुमने छोटे से छोटे के लिए नहीं किया मेरे लिए भी नहीं किया, प्रभु हमसे कहेगा (न्याय के दिन)।